International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 04-07-2021; Accepted: 20-07-2021; Published: 04-08-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 09-13

भारत चीन सम्बंधः दशा और दिशा अतीत से वर्तमान तक

डॉ. रमेश प्रसाद कोल
सहायक प्राध्यापक, राजनीतिशास्त्र विभाग, शासकीय रणविजय प्रताप सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उमरिया, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
भारत व चीन एशिया की उभरती ऐसी शक्तियॉ हैं जिनकी विदेश नीति का विश्व एशिया की राजनीति पर गहरा प्रभाव पडता है। इनके पारस्परिक सहयोग अथवा संघर्ष से न केवल एशियाई सुरक्षा परिवेश अपितु वैश्विक शक्ति संरचना पर भी प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे है। भारत–चीन सीमा विवाद के जटिल परिदृश्य से भारत की सुरक्षा जहॉ एक ओर अस्थिरता से गस्त है वहीं चीन व भारत पडोसी राष्ट्र के मध्य स्थापित सामरिक व नाटकीय संबंधों के अतिरिक्त एशिया प्रशांत क्षेत्र में निरंतर बढ रही उसकी सामरिक अभिरूचि से भारतीय सुरक्षा पर दबाव बढ रहा है। विश्व स्तर पर तीव्रता से उभर रही द्वितीय व चौथी बडी आर्थिक शक्तियों क्रमशः चीन व भारत के मध्य हो रही स्पर्धा से न केवल एशिया अपितु अंतर्राष्ट्रीय भू–राजनीतिक स्वरूप के प्रभावित होने की प्रबल संभावनाएँ हैं। भारत–चीन दोनो पडोसी एवं विश्व के दो उभरती शक्तियॉ हैं। दोनों के बीच लम्बी सीमा रेखा है। इस तरह भारत–चीन लोक गणराज्य को मान्यता देने वाला प्रथम गैर–समाजवादी देश बना। वर्ष 1954 के जून माह में चीन, भारत व म्यान्मार द्वारा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पॉच सिंद्धांत यानी पंचशील परिवर्तन किये गये। इन दोनों में प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक तथा आर्थिक सम्बंध रहे हैं। भारत से बौद्ध धर्म का प्रचार चीन की भूमि पर हुआ है। चीन के लोगों ने प्राचीन काल से ही बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत के विश्वविद्यालयों अर्थात नालंदा विश्वविद्यालय एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय को चुना था क्योंकि उस समय संसार में अपने तरह के यही दो विश्वविद्यालय शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। उस काल में यूरोप के लोग जंगली अवस्था में थे। यद्यपि 1946 में चीन के साम्यवादी शासन की स्थापना हुई तदपि दोनों देशों के बीच मैत्री सम्बंध बराबर बने रहे। चीन के संघर्ष के प्रति भारत द्वारा विकासशील देश नीति की गई एवं पंचशील पर आस्था भी प्रकट की गई। वर्ष 1949 में चीन की स्थापना के बाद के अगले वर्ष, भारत ने चीन के साथ राजनयिक सम्बंध स्थापित किये। इस तरह भारत, चीन लोक गणराज्य को मान्यता देने वाला प्रथम गैर–सामाजवादी वाला देश बना।

मूल शब्दः भारत चीन सम्बंध, दिशा अतीत, वर्तमान

प्रस्तावना

भारत–चीन दोनों पड़ोसी एवं विश्व के दो उभरती शक्तियाँ हैं। दोनों के बीच लम्बी सीमा–रेखा है। इन दोनों में प्रचीन काल से ही सांस्कृतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत से बौद्ध धर्म का प्रचार चीन की भूमि पर हुआ है। चीन के लोगों ने प्राचीन काल से ही बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत के विश्वविद्यालयों अर्थात् नालन्दा विश्वविद्यालय एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय को चुना था क्योंकि उस समय संसार में अपने तरह के यही दो विश्वविद्यालय शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। उस काल में यूरोप के लोग जंगली अवस्था में थे। यद्यपि 1946 में चीन के साम्यवादी शासन की स्थापना हुई तदपि दोनों देशों के बीच मैत्री सम्बन्ध बराबर बने रहे। चीन के संघर्ष के प्रति भारत द्वारा विकासशील देश नीति की गई एवं पंचशील पर आस्था भी प्रकट की गई। वर्ष 1949 में नये चीन की स्थापना के बाद के अगले वर्ष, भारत ने चीन के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किये। इस तरह भारत, चीन लोक गणराज्य को मान्यता देने वाला प्रथम गैर–समाजवादी देश बना। वर्ष 1954 के जून माह में चीन, भारत व म्यान्मार द्वारा शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धान्त यानी पंचशील प्रवर्तित किये गये। पंचशील चीन व भारत द्वारा दुनिया की शान्ति व सुरक्षा में किया गया एक महत्वपूर्ण योगदान था, और आज तक दोनों देशों की जनता की जबान पर है। देशों के सम्बन्धों को लेकर स्थापित इन सिद्धान्तों की मुख्य विषयवस्तु है– एक–दूसरे की प्रभुसत्ता व प्रादेशिक अखण्डता का सम्मान किया जाये, एक–दूसरे पर आक्रमण न किया जाये, एक–दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न किया जाये और समानता व आपसी लाभ के आधार पर शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व बरकारार रखा जाये। परन्तु चीन नें मैत्री सम्बन्धों को ताख पर रख कर 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया और भारत की बहुत सारी भूमि पर कब्जा करते हुए 21 नवम्बर 1962 को एकपक्षीय युद्धविराम की घोषणा कर दी। उस समय से दोनों देशों के सम्बन्ध आज–तक सामान्य नहीं हो पाए हैं। जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद लाल बहादुर शास्त्री ने चीन से दोस्ती का हाथ आगे बढ़ाया, परन्तु भारत को सफलता नहीं मिली, क्योंकि चीन ने 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में अन्यायपूर्ण ढँग से पाकिस्तान का एकतरफा सर्मथन किया था। 23 सितम्बर 1965 को

भारत–पाकिस्तान युद्धविराम का समझौता हो गया। अतः चीन के सारे इरादों पर पानी फिर गया।

पाकिस्तान ने भारत के शत्रु की हैसियत से चीन को काराकोरम क्षेत्र में बसा दिया एवं पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का 2,600 वर्ग मील भूदृभाग चीन को सौंप दिया। जिससें चीन के साम्यवादी दल के सर्वाधिक शक्तिशाली नेता एवं चीन के राष्ट्रपति जियांग जोमीन ने नवम्बर 1966 में तीन दिन की भारत यात्रा की थी। यह चीन के राष्ट्रपति द्वारा की गई पहली यात्रा थी। इस यात्रा के दौरान एक एतिहासिक समझौता किया गया, जिसके अर्न्तगत वास्तविक नियन्त्रण रेखा पर एक दूसरे द्वारा आक्रमण नही करने का वचन दिया गया। दोनों देशों ने अपने सैनिक बल का प्रयोग न करने का एवं हिमालय की झगड़े वाली सीमा पर शान्ति व्यवस्था बनायें रखने का समझौता किया। इस यात्रा के समय 11 सूत्रीय समझौता किया गया। अक्टूबर 1667 में भारत और चीन के मध्य तेल एवं गैस को प्राप्ति करने की भागीदारी के लिए एक समझौता किया गया था। 70 के दशक के मध्य तक भारत और चीन के सम्बन्ध शीत काल से निकल कर फिर एक बार घनिष्ठ हुए। जनवरी 1980 से चीन ने कुछ नरमी प्रदर्शित की जिसके फलस्वरूप भारत–चीन सम्बन्धों में सुधार की आशा व्यक्त की गई।

भारत और चीन न केवल पडोसी राष्ट्र हैं अपितु उनमें प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक संबंध चले आ रहे हैं। जिसका इतिहास साक्षी है जब दोनो विदेशी आधिपत्य मे चले गये तो इनके ये संबंध टूट गये। 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ और उधर 1949 में कोमिंतांग सरकार के पतन के बाद चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। साम्यवादी शासन की स्थापना के बाद ही यह महसूस किया गया कि भारत के चीन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बंधों की स्थापना का मार्ग अनेक कठिनाईयों से भरा हुआ है। भारत ही वह प्रथम देश था जिसने साम्यवादी चीनी सरकार को सर्वप्रथम मान्यता प्रदान की थी। चीन के प्रति भारत का दृष्टिकोण प्रारंभ से ही मित्रतापूर्ण रहा है। सन 1954–57 के काल भारत–चीन सम्बंधों में प्रमोद काल कहलाता है। स्वतंत्र भारत में हिन्दी–चीनी–भाई–भाई का नारा बहुत लोकप्रिय रहा है। यह प्रमोद काल अधिक समय तक नहीं चल पाया और चीन ने भारत के साथ विश्वासघात किया तथा 1962 में भारत पर अचानक आक्रमण कर दिया। यह आक्रमण चीनी की साम्राज्यवादी नीति का परिणाम था। इसके परिणाम स्वरूप भारत और चीन के मधुर सम्बंध बिगड गए और इनमें भारी कटुता आ गई। चीन ने पंचशील समझौते का पूर्णतया उलंघन किया। 1957–1978 तक भारत–चीन सम्बंध में टकराव और तनाव चलता रहा है। इस काल में चीन यह प्रयास कर रहा था कि भारत के पडोसी देशों को अपनी ओर मिला लें। इसलिए वह पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, म्यामार को अनेक सहायताएं प्रदान कर रहा है। इस सम्बंध में चीन का पाकिस्तान प्रेम जगजाहिर है और वर्तमान में भी चीन–पाक प्रेम देखने को मिलता है। बांग्लादेश संकट के समय भी चीन भारत को लगातार धमकियां देता रहा। चीन हर संभव प्रयास कर रहा था कि भारत विकास की राह पर आगे बढ सके।

1978–2008 तक के काल को भारत–चीन सम्बंधों में संवाद के काल के नाम से जाना जाता है इस समय दोनों देशों में सत्ता परिवर्तन हुआ। भारत में जनता सरकार सत्तारूढ हुई तो चीन में माओत्तर नेताओं द्वारा सत्ता संभाली गई। दोनों देशों ने विगत बातों को भूलकर नये सिरे से मधुर सम्बंध स्थापित करने की दिशा में प्रयास किये। अनेक कूटनीतिक माध्यमों से भारत को पीकिंग से इस बात के सकते मिले कि वह भारत के साथ संबंध सुधारने का इच्छुक है जिसकी शुरूआत 1975 में टेबिल–टेनिस की प्रतियोगिता से हुई जिसका आयोजन कलकत्ता में हुआ था। इसमें चीनी खिलाडियों के एक दल ने भाग लिया। इसके बाद 1978 में वांग–पिंग–नान के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल भारत आया और यात्राओं का दौर चल पडा। दिसम्बर 1988 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 5 दिवसीय चीनी यात्रा की। यह पिछले 34 वर्षों में पहला अवसर था जब कोई भारतीय प्रधानमंत्री चीन यात्रा पर गया। यह यात्रा भारत–चीन संबंध में सुधार का संकेत थी।

1994 में चीन में भारत महोत्सव आयोजित किया गया यह चीन में होने वाला किसी विदेशी राष्ट्र का पहला महोत्सव था। दोनो देशों में राजनीतिक एवं व्यापारिक तथा सांस्कृतिक यात्राएं चलती रहीं। किन्तु इसी बीच तिब्बत के धार्मिक गुरू करमापा लामा को शरण देने का मामला उठ खडा हुआ। 11 जनवरी 2000 को चीन ने भारत को परोक्ष चेतावनी देते हुए कहा कि वह भारत पहूँचे तिब्बती धार्मिक नेता करमापा लामा को राजनीतिक शरण न दें। चीनी विदेश मंत्रालय के अनुसार करमापा लामा को राजनीतिक शरण देना दोनों देशों के सम्बंधों के आधार शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पंचशील सिद्धांतों का उलंघन होगा।

तत्कालीन भारतीय राष्ट्रपति के.आर.नारायणन ने चीन के साथ संबंधों को और मजबूत करने के उद्देश्य से सन 2000 में चीन की छःदिवसीय राजकीय यात्रा की। दोनों देशों ने उलझे हुए सीमा विवाद के तर्कसंगत हल पर सहमति व्यक्त करते हुए द्विपक्षीय संबंधों के विस्तार के लिए विशिष्टजन दल गठित करने का फेसला किया। सितम्बर 2000 को शंघाई में भारत व चीन की नौसेनाओं ने पहला संयुक्त युद्धाभ्यास सम्पन्न किया। इसके बाद चीनी प्रधानमंत्री ने कहा कि चीन–पाकिस्तान का निकट सहयोगी एवं मित्र है, फिर भी आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष में वह पूरी तरह भारत का साथ देगा।

मई 2004 में प्रकाशित वर्ल्ड अफेयर्स ईयर बुक 2003–04 में चीन ने पहली बार सिक्किम को भारत के अंग के रूप में प्रदर्शित किया। यह भारत के लिए अच्छा संकेत था। इसके बाद 2005 में चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ बंगलौर के रास्ते दिल्ली आये। वेन के मौजूदा यात्रा में पॉच वर्ष में सभी विवादों को सुलझाने और सहयोग व साझीदारी की नई उॅचाईयों तक ले जाने की जो सहमति बनी, वह इसी का संकेत है। दोनो देशों ने जिस समझौते पर दस्तखत किये उससे तय हो गया कि सीमा–विवाद को संबंधों के आडे नहीं आने दिया जायेगा।

2007 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंन ने चीन का दौरा किया। दोनों पक्षों इने भारत और चीन के बीच 21वीं सदी के लिए एक साझा विजन को जारी किया और विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के लिए 10 अन्य दस्तावेजों पर भी हस्ताक्षर किए। इसी तरह कई वर्षों तक भारत–चीन यात्राएं चलती रहीं।

भारत–चीन रणनीतिक आर्थिक वार्ता–पारस्परिक लाभ के लिए विकास, नवाचार और सहयोग विषय के अन्तर्गत अक्टूबर–2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। आपसी संबंधों को और प्रगाढ करने के उद्देश्य से भारत और चीन के बीच विभिन्न क्षेत्रों–नीति समन्वय, बुनियादी ढांचे, उच्च तकनीकि, संसाधन और पर्यावरण सरक्षण तथा उर्जा आदि के क्षेत्र में कार्य समूहों के आधार पर वार्ता की गई। इस वार्ता के दौरान दोनों देशों ने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से उर्जा खरीदने, हाई स्पीड रेलवे के निर्माण और तटीय विनिर्माण क्षेत्रों के विकास में सहयोग समझौते किए। दोनों देशों के बीच उर्जा की बढती मांगों को पूरा करने के उद्देश्य से एक उचित व नीतिगत प्रयासों के लिए संयुक्त रूप से निर्णायक रणनीति बनाने पर सहमति हुई। साथ ही दोनों देशों ने वर्ष 2017 तक बुनियादी ढांचे, ऑटोमोबाईल, उर्जा और इलेक्ट्रानिक्स जैसे क्षेत्रों में विकास पर निकट सहयोग की नई थीम अपनाने पर सहमति व्यक्त की।

इसके अतिरिक्त दोनो देशों ने दिल्ली–नागपुर हाई–स्पीड रेल परियोजना के व्यवहार्यता अध्ययन तथा दिल्ली–चेन्नई हाईस्पीड रेलवे के निर्माण के कार्य को आगे बढाने पर सहमति जताई। चाइना साउथ वेस्ट जियाहोटोंग विश्वविद्यालय तथा भारत के रेल मंत्रालय का प्रशिक्षण विभाग हाई स्पीड रेलवे के क्षेत्र में आठ प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करने पर सहमत हुए।

इन सबके बावजूद चीन अपनी हरकतों से कभी बाज नहीं आया है। वह बीच–बीच में कोई न कोई विवाद खडा कर देता है चाहे सीमा विवाद हो या नदी जल विवाद या एनर0एस0जी0 में भारत की सदस्यता का प्रश्न हो वह लगातार भारत को रोंकने का प्रयास करता है।

अभी हाल ही में 15–16 जून 2020 को लद्दाख की गलवान घाटी में एलएसी पर हुई इस झडप में भारतीय सेना के एक कर्नल समेत 20 सैनिक की मौत हुई थी, भारत का दावा है कि चीनी सैनिकों का भी नुकसान हुआ है लेकिन इसके बारे में चीन की तरफ से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। चीन ने अपनी सेना को किसी भी तरह का कोई नुकसान होने की बात नहीं मानी है, इसके बाद दोनो देशों में पहले से मौजूद तनाव और बढ चुका है दोनो ही देश एक–दूसरे पर अपने इलाकों के अतिक्रमण करने का आरोप लगा रहे हैं।

बताया जा रहा है कि गलवान घाटी में भारत–चीन लाईन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल पर दोनों सेनाओं के बीच झडप में हथियार के तौर पर लोहे की रॉड का इस्तेमाल हुआ जिस पर कीलें लगी हुईं थी, भारत–चीन सीमा पर मौजूद भारतीय सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी बीबीसी को ये तस्वीर भेजी है और कहा है कि इसी हथियार से चीनी सैनिकों ने भारतीय सैनिकों पर हमला किया था।

भारत और चीन दोनों ही दक्षिण एशिया की तेजी से उभरती हुई महाशक्तियॉ हैं। आर्थिक क्षेत्र से लेकर सैन्य शक्ति तक दोनो तेजी से खुद को मजबूत बनाने में जुटी हैं। अपना–अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए दोनों ही आमने सामने जा जाते हैं। दोनों मुल्कों के बीच टकराव के एक नहीं कई कारण हैं, लेकिन सीमा विवाद सबसे प्रमुख है

1. **सीमा विवादः** भारत और चीन के बीच किसी एक क्षेत्र को लेकर सीमा विवाद नहीं है बल्कि कई ऐसे क्षेत्र हैं जहॉ चीन तो कहीं भारत को आपत्ति है। दोनों देशों के बीच करीब 3500 किमी लम्बी सीमा है। ताजा मामला सिक्किम का है, जहॉ पठारी क्षेत्र डोकलाम पर चीन अपना दावा करता है तो भूटान अपना दावा करता है। भारत भूटान के दावे का समर्थन करता है। चीन में इस क्षेत्र को डोगलोंग नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त चीन, अरूणांचल प्रदेश के बडे हिस्से पर अपना दावा करता है। अरूणांचल की 1126 कि0मी0 लम्बी सीमा चीन के साथ और 520 कि0मी0 लम्बी म्यांमार के साथ मिलती है। चीन कहता है कि भारत से उसका सीमा विवाद सिर्फ 2000 किमी. है। इसमें ज्यादातर हिस्सा अरूणांचल प्रदेश में आता है।

   इन दोनों क्षेत्रों के अलावा एक मामला अक्साई चीन पर भारत–चीन का विवाद है। भारतीय पक्ष है कि ब्रिटिश भारत और तिब्बत में 1914 में शिमला समझौते के तहत मैकमोहन को अंतराष्ट्रीय सीमा माना, जबकि चीन इसको नहीं मानता। 1962 के युद्ध के बाद हमारा बहुत बडा भाग चीन ने अपने हिस्से में मिला लिया, जिसे अक्साई चीन कहा जाता है। अक्साई चीन का कुल हिस्सा करीब 38 हजार वर्ग किमी. लम्बा है जो निर्जन पहाडी इलाका है।

2. **ब्रम्हापुत्र नदी पर बांधः** चीन ने तीब्बत में ब्रम्हापुत्र नदी पर अपनी सबसे बडी पन–बिजली परियोजना 'जम हाइडो पावर स्टेशन' का निर्माण किया है। इस परियोजना से भारत को यह चिंता है कि चीन जल आपूर्ति को बांधित कर सकता है या संघर्ष के समय इन बाधों से अतिरिक्त पानी छोड सकता है जिससे भारत में बाढ आने का गंभीर खतरा पैदा हो जायेगा। एक गैर सरकारी संगठन की रिपोर्ट के अनुसार चीन ने ब्रम्हापुत्र नदी पर करीब छोट–बडे 26 बांधों का निर्माण किया है जबकि चीन के बुहान क्षेत्र में स्थित जम हाइडोपावर स्टेशन में उसने 1.5 अरब डॉलर का निवेश किया है। इन बांधों के विरूद्ध अक्सर अपनी आपत्ति जताता रहा है।

3. **नदियों के पानी का बहावः** मांउंट कैलाश से निकलने वाली 4 नदियां भी दोनों देशों के लिए एक बडे विवाद की जड है। इसमें ब्रम्हापुत्र शामिल है। जहां चीन ने बांध बनाकर पानी को बाधित कर दिया है। इससे जल का बहाव प्रभावित है। इसके अलावा मा–चा–खबब, लैंगचग खबब और सेंगे खबब भी ऐसे तीन नदियां हैं, जो चीन से निकलती हुई भारत पहॅुचती हैं। मा–चा–खबब की बात करें तो वो उत्तरी माउंट कैलाश से निकल कर नेपाल पहुंचती है और इसके बाद भारत के उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती हैं। लैंगचंग खबब नदी भी उत्तरी माउंट कैलाश से निकलकर धापा और नागरी क्षेत्र में बहते हुए पहॅुचती हैं। इसके बाद किन्नौर वैली और रामपुर होते हुए भारत में प्रवेश करती हैं। भारत में इसे सतलज नदी के नाम से जाना जाता है। यह हिमांचल से बहते हुए सतलज पंजाब और फिर पाकिस्तान पहुंचती हैं।

चौथी नी सेंगे खबब है, जो पश्चिम माउंट कैलाश से निकलकर लद्दाख और कश्मीर में प्रवेश करती है इसके बाद वो पाकिस्तान पहुंचकर अरब सागर में समा जाती है। इन नदियों पर चीन का प्रभुत्व और इन पर बडे बांध बनाने की योजना है। पानी के बंटवारे पर जहॉ भारत को आपत्ति है तो चीन इस पर अपना अधिकार जताता है।

बीच–बीच में चीन कुछ ऐसे कार्य करता रहता है कि भारत–चीन संबंधों में कुछ कटुता सी आ जाती है। चीन की हिंद महासागर में अवैध घुसपैठ इसका ताजा उदाहरण है। हिंद महासागर में चीनी नौ सेना की बढती दखलंदाजी ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में ला दिया है। चीन ने भारत को चेताते हुए कहा कि सामरिक रूप से एक खास हिंद महासागर क्षेत्र में संतुलन लाने में वह भारत की अहम भूमिका को स्वीकार करता है, किन्तु इसे भारत का ऑगन समझने की धारणा परेशानी का कारण बन सकती है। चीन ने कहा कि यदि भारत यह मानता है कि हिंद महासागर में स्वतंत्र आवागमन करती है। हिंदमहासागर में चीनी नौसेना की बढती उपस्थिति पीपुल्स लिबेरेशन आर्मी द्वारा हाल ही में प्रकाशित एक श्वेत पत्र की पृष्ठीूमि में हुई है जिसमें अपने तटों से बहुत अधिक दूर खुले समुद्र में संरक्षण के लिए चीनी सेना की भूमिका को पहली बार रेखांकित किया गया है औरइसमें नई सैन्य सामरिक नीति की रूप रेखा पेश की गई है। हिन्द महासागर में चीनी हस्तक्षेप भारत के लिए चिंता का सबब बना हुआ है।

मोदी सरकार भारत–चीन सम्बन्ध

2014 में नरेन्द्र मोदी जब भारत के प्रधानमन्त्री बने तो पूरा देश उनमें भारत के लिए कई संभावनाएं देख रहा था। चीन और पाकिस्तान के साथ भारत के संबंध को लेकर भी देश के लोगों को काफी उम्मीद थी। नरेन्द्र मोदी ने शुरुआत में अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ संबंध बेहतर करने की दिशा में काफी प्रयास भी किए। इसी कड़ी में सितम्बर 2014 को चीन के राष्ट्रपति मोदी के निमंत्रण पर अहमदाबाद पहुंचे। जिस तरह से मोदी ने उनकी आगवानी की, उससे लगा कि दोनों देशों के बीच सम्बन्ध सुधरेगा। इस यात्रा के दौरान कैलाश मानसरोवर यात्रा के नए मार्ग और रेलवे में सहयोग समेत 12 समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। इसके अलावा दोनों देशों ने क्षेत्रीय मुद्दों और चीन के औद्योगिक पार्क से संबंधित समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। हालांकि उसी दौरान चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के करीब 1000 जवान पहाड़ी से जम्मू कश्मीर के चुमार क्षेत्र में घुस आए थे। भारत ने चीनी राष्ट्रपति के सामने यह मुद्दा उठाया लेकिन अपनी तरफ से वार्ता में कोई खलल नहीं पड़ने दिया। 18 जून साल 2017 को डोकलाम पर सीमा विवाद को लेकर एक बार पिर से दोनों देशों के बीच तनाव शुरू हुआ और यह लगभग 73 दिनों तक चला। ध्यातव्य है कि भारत–भूटान और चीन को मिलाने वाला बिन्दु को भारत में डोकलाम, भूटान में श्डोक लाश और चीन में श्डोकलांकश कहा जाता है। डोकलाम एक पठार है जो भूटान के हा घाटी, भारत के पूर्व सिक्किम जिला, और चीन के यदोंग काउंटी के बीच में है।

निष्कर्ष

भारत और चीन के संबंध में सभी सामायिक मुद्दों का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष निकलता है कि अब दोनों देशों के बीच युद्ध सेनाओं द्वारा नहीं लडा जाएगा, बल्कि यह समय दोनो देशों के बीच आर्थिक नीतियों के युद्ध का है, कुटनीतिक युद्ध का है। हम यह कह सकते हैं कि भविष्य भारत और चीन का है। भारतीय ब्रिटेन और अमेरिका के बारे में ज्यादा जानते है। अब

समय है चीन को समझने, देखने और जानने का। ध्यान रहे कि दो हजार वर्ष के इतिहास में सिर्फ एक युद्ध हुआ है। चीनी जन मानस भी भारत को बुद्ध के देश के रूप में देखते हैं। यह समय की मांग और जरूरत है कि एक ओर जनता के स्तर पर चीन से सम्बंध बढे वहीं दूसरी ओर भारत आर्थिक एवं सैन्य स्तर पर शक्तिवर्द्धन को गति दें। ऐसा होने पर ही भविष्य के डोकलाम रोके जा सकेंगे। डोकलाम और हिंद महासागर में चीन की लगातार घुसपैठ के कारण भारत–चीन संबंधों में पैदा हो रहे नए विश्वास के बादल भी गायब हो गए है। इसलिए अब चीन पर भरोसा करना पहले से भी ज्यादा मुश्किल होगा। भले ही आज राष्ट्रीय क्रिकेट टीम को चीनी कंपनी प्रायोजित कर रही हो और चीनी मोबाईल फोनों के लिए दिग्गज हस्तियां विज्ञापन कर रही हो, लेकिन पिछले तीन वर्षों में चीनी उत्पादों की बिक्री में 13 प्रतिशत कमी दर्ज की गई है और चीनी कम्पनियों के दर्जनों एक्जीक्यूटिव चीन लौट गए। जाहिर है डोकलाम का असर गहरा जायेगा। डोकलाम जैसी घटनाएं वर्ष में दो तीन बार चीन की सीमाओं पर होती ही हैं। हालांकि उनका स्तर छोटा होता है। भारत को आने वाले समय के लिए और चौकन्ना एवं तैयार रहना होगा। सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास, सडक निर्माण एवं सैन्य तैयारियों पर विशेष ध्यान देते हुए चीन के साथ आयात–निर्यात में असंतुलन ठीक करना होगा। उत्तराखंड जैसे प्रांतों में सीमा क्षेत्रों से हो रहा लगातार पलायन सुरक्षा के लिए खतरा है। इसके लिए विशेष परियोजना बनाने में देरी न हो। फिलहाल चीनी धमकियों को भारत की संयमित, किन्तु धारदार कुटनीति ने परास्त कर दिया, लेकिन जीत के जश्न का कोई कारण नहीं है।

सन्दर्भ

1. डॉ.बी.एल.फडिया, अतंर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2010
2. दृष्टि द विजन, वार्षिक 2020 दृष्टि पब्लिकेशन,2020
3. डॉ.एस.सी.सिंघल, भारत की विदेश नीति, लक्ष्मी नारायण पब्लिकेशन
4. दैनिक भाष्कर संपादकीय 17 जुलाई 2020
5. परीक्षा मंथन भारत–चीन संबंध उलझे तार, 2010–2011
6. आर.एस.यादव, भारत की विदेश नीति, किताब महल प्रकाशन
7. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारत और चीन, सत्मार्ग प्रकाशन दिल्ली, सन 2000
8. एयर कमांडर जसजीत सिंह, भारतीय परमाणु शस्त्र एक नई दिशा, प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2004
9. श्री माधव, असहज पडोसी युद्ध के 50 वर्षों बाद भारत और चीन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2015
10. प्रो0 रामचन्द्र सिंह, आक्रांत हिमालय, शारदा संस्कृत संस्थान प्रकाशन वाराणसी।
11. जे. एन. दीक्षित, भारत की विदेश नीति और आतंकवाद, ज्ञान पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली
12. दौलत सिंह जोरावर, द हिमालयन स्अेलमेंट रीट्रसींग द इंडिया–चीन डिस्टयुट, सेक्टर फॉर लैंड वैलफेयर स्ट्रेटजी, के0 डबलू0 प्रकाशन नई दिल्ली 2011
13. दैनिक भाष्कर, चिंतिक करता चीन संपादकीय, 16 सितम्बर 2010